शख्सियत...

सोलाना ग्राम पंचायत को भारत सरकार ने दिया 13 लाख का पुरस्कार

सरपंच ने पेश की एक अनूठी मिसाल

ग्राम पंचायत: सोलाना ,जिला झुंझुनू ,राजस्थान .

नाम सरपंच : सुमित्रा देवी

राजनीति में : वर्ष 2010 से

ग्राम पंचायत को दी कई सौगातें : सुमित्रा देवी ने अपने कार्य काल में पंचायत को जो भी आधिकार प्राप्त है। उस में हर क्षेत्र में कार्य किया ,जैसे पंचायत की आय बढ़ाना ,महिला विकास के कार्य, पेयजल हेतु कार्य ,स्वछता के कार्य एवं पंचायत की नियमित बैठके करवाना।

विशेष : ग्राम पंचायत सोलाना को अपने कार्य सुचारू रूप से करने पर भारत सरकार ने 13 लाख रुपये का पुरस्कार देकर सन्मानित किया है7

पर्यावरण कार्य : ग्राम पंचायत सोलाना के पर्यावरण के क्षेत्र में भी विशेष कार्य किया है। ग्राम में ही पोधों की नर्सरी लगवाकर गावं में वृक्षारोपण का कार्य किया है।

ग्राम पंचायत सोलाना ने एक **N G O** के साथ मिलकर गावं के टीले पर गोगाजी के मंदिर में 1 लाख ली. बरसाती पानी को इकठ्ठा करके उसे पुर्न उपयोग में लेने का प्लांट तैयार किया है7

शमशान की भूमि पसरे अतिक्रमण हटवाकर शमशान भूमि में पेड पोधें लगवाए।

इलाहबाद यूनिवर्सिटी की टीम गावं में दिए गए कार्य का अध्यत करने भी आई।

भारत सरकार की एक विशेष कमिटी में सोलाना सरपंच को मेम्बर बनाया गया है,जिसमे पुरे देश से केवल मात्र 5 महिलाओं का चयन किया गया। जब हमारी टीम ने गांव का दौरा किया तो आमजन से भी यही जानकारी मिली कि ग्राम पंचायत सोलाना को सरपंच एवं अन्य जिले के प्रतिनिधियों के सहयोग से सोलाना में सौहार्दपूर्ण माहौल एवं विकास को अंजाम मिला है। इस मौके पर सरपंच के पति मोहरसिंह से बातचीत में सामने आया कि सरपंच ही नहीं गांव के जागरूक एवं गणमान्य लोग गांव को एक आदर्श पंचायत के रूप में देखना चाहते है।

विशेष रिपोर्ट- मुकेश गढ़वाल

किसानों के लिए अगले सप्ताह आरंभ होगा एसएमएस पोर्टल

नई दिल्ली। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी 16 जुलाई, 2013 को किसानों के लिए 'किसान एसएमएस पोर्टल' का आरंभ करेंगे। इस किसान पोर्टल का उद्देश्यज देश भर के 12 करोड़ किसानों तक जानकारी, परामर्श तथा विभिन्नर सेवाएं पहुंचाना है। तत्कांल तथा बिना दखल देने वाले संचार माध्यभम के रूप में एसएमएस परामर्श तथा अलर्ट किसानों को फसल उत्पासदन तथा विपणन, पशु-पालन, डेयरी तथा मछली पालन इत्यासदि के विभिन्न पहलुओं पर जानकारीपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम बनाएंगे। किसान अपनी जरूरतों के अनुरूप एसएमएस सेवा प्राप्तस कर सकते हैं। मौसम पूर्वानुमान अलर्ट से किसानों को मौसम की परिस्थितियों के अनुरूप खेती के कार्यों को प्रभावी रूप से करने तथा खराब मौसम से उपजी परिस्थितियों से निपटने में मदद मिलेगी। बीमारियों/कीट आक्रमण आदि से संबंधित परामर्श से किसानों को अपनी फसल तथा जानवरों को सुरक्षित रखने में मदद मिलेगी। फसलों की विभिन्नश किस्मोंप और जानवरों की नस्लि संबंधी परामर्श उत्पा दकता के साथ साथ किसानों की आमदनी बढ़ाने में मदद करेंगे। एसएमएस के माध्यजम से किसानों को बाज़ार के विषय में समय समय पर जानकारी मिलती रहेगी जिससे वे बेहतर तरीके से अपने सौदे कर पाएंगे। किसानों को यह सेवा प्राप्ती करने के लिए किसान कॉल सेंटर के टॉल फ्री नम्बकर 1800-180-1551 पर कॉल करना होगा। विभिन्न् विभागों के अधिकारी, विशेषज्ञ तथा शोध संस्थाएनों एवं कार्यक्षेत्र के वैज्ञानिक इस पोर्टल पर स्थानीय भाषाओं में जानकारी और परामर्श देंगे। अधिकारी अपने क्षेत्राधिकार अथवा इसके किसी भाग के किसानों को जानकारी दे सकेंगे। स्थाऔन, फसल/गतिविधियों इत्यासदि के आधार पर किसानों द्वारा तैयार किए गए विभिन्नज समूहों के माध्यऔम से किसानों को प्रासंगिक जानकारी भेजना आसान होगा।

एस. सरदार जी.की. कहानी

किसान की जुबानी

मेरे पास किन्नू का अ. एकड़ बा- है । मेरे बा- में पीले पन तथा सूखने की समस्या थी मैंने इस बार जनवरी-फरवरी मे हिन्द कैम कॉरपोरेशन की खाद एस.सरदार. जी खाद पौधे में डाली जिसके फल स्वरूप मुझे इन दोनों बीमारी से निजात मिली और इसबार फल भी पहले की अपेक्षा अधिक है। मै अपने सभी किसान भाईयों से अनुरोध करता हूँ की आप भी ये खाद अपने बा- में डाल कर देखें।

किसान का नाम: बलतेज सिंह
गांव: हाकमाबाद (राजस्थान)

हमारे ऐरीया अबोहर में किन्नू की फसल अधिक है इसमें मेन बिमारी किन्नू को एक साल फल अधिक आना और दूसरे साल बिलकुल नही आना । इस साल मेरी फसल मे यह क्रिया होनी थी तो मैने हिन्द कैम कॉरपोरे्यान की दवाई एस.सरदार जी लिक्केड का स्प्रे किया जिस के फलस्वरूप मेरी किन्नू की फसल में फल अधिक आया है अथ्वा फल का ि-रना भी बहुत कम है और मै एस.सरदार जी दानेदार भी इस्तेमाल करता हूँ।

किसान का नाम: चौं. ओम् प्रका्या जी सिहमार
गांव: धर्मपुरा (अबोहर)

मै सोहन लाल पुत्र श्री सतपाल मेरे पास गग एकड़ बिजाई थी उसमे मैने पहले पानी पर हिन्द कैम कॉरपोरे्यान कम्पनी का एस.सरदार जी दानेदार ,0 किलो ग्राम यूरिया के साथ डाला था । मेरी -गेहूँ की फसल में ज्यादा शाखाऐं और ग्रोथ हुई जिस के फल स्वरूप मेरे -गेहूँ का झाड़ने से । मन प्रति एकड़ बढ़ा है। मै पिछले एक साल से ये खाद अपनी फसल में लगातार डाल रहा हूँ ।

किसान का नाम: सोहन लाल
गांव: अजीम-ड़ (हिन्द मार्बल), अबोहर ।
मैं-नेट की घुद्धि काक्षर की छुट्टी

मेरे पास किन्नू का अ् एकड़ बा- है । मै पिछले साल से हिन्द कैम कॉरपोरे्यान कम्पनी की खाद एस.सरदार जी दानेदार डाल रहा हूँ । इसके डालने के बाद मुझे बहुत लाभ मिला है तथा हमारे ऐरिया में बड़ी प्रोब्लम काक्षर (ऋ) की मात्रा अधिक है। उसके कारण पौधो के सुखने (क्पलईबा) की समस्या बढ़ती जा रही है तो मैने इस बार मै-नेट दानेदार खाद डाली थी इसके डालने के बाद मेरे बा- को इस बीमारी से छुटकारा मिला है।

किसान का नाम: चौं. सुनील कुमार जी
गांव धर्मपुरा, अबोहर ।

तुलसी की उन्नत खेती के लिए वैज्ञानिक तकनीक

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवं अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांषिकी एवं पौध प्रजनन विभाग

तुलसी की लगभग 60 प्रजातियाँ एषिया, अफ्रीका, अमेरिका तथा अन्य देषों में पाई जाती है। इनमें ओसीमम सेन्कटम (घरेलू तुलसी) ओ. बेसीलिकम, ओ. केनम या अमेरिकेनम (काली तुलसी) ओ. ग्रेटीसीमम (वन या राम तुलसी) ओ. क्लीमेन्डसचेरिकम (कपूर तुलसी) एवं ओ. विरिडी (जंगली तुलसी) प्रमुख है। तुलसी का पौधा औषधीय गुणों से परिपूर्ण एवं सगंध तेल का उत्तम स्रोत हैं।

उपयोग: विभिन्न प्रजातियों की तुलसी के तेल में रासायनिक तत्व अलग-2 होने के कारण विभिन्न उत्पादों में प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग सुगंध बनाने, सर्दियों की औषधियों निर्माण, खाँसी एवं कफ की दवा बनाने, कन्फैक्षनरी उद्योग एवं टुथ पेस्ट, माऊथवास, डेन्टल क्रीम आदि के निर्माण में किया जाता है। इसका तेल खाद्य पदार्थों को सुवासित करने में भी किया जाता है।

प. मीठी तुलसी (ओसीमम बेसीलिकम)

ओसिमम बेसिलिकम को स्वीट बेसिल या फ्रेंच बेसिल या इंडियन बेसिल आदि नामों से भी जानते हैं। यह प्रजाति बहुत ही उपयोगी है, क्योंकि इसमें मीठा तुलसी का तेल (स्वीट बेसिल आयल) मिलता है। लगभग 3000 साल से इसकी खेती यूरोप और एशिया में की जा रही है। ओसिमम बेसिलिकम लेमिएसी कुल का पौधा है। पौधे की लंबाई 30-90 सैं.मी. होती है। पत्तियों की लंबाई 3-5 सैं.मी. होती है। पौधे में बहुत सी तेल कोशिकाएं होती हैं जो सगंध तेल देती है।

जलवायु: तुलसी को सभी प्रकार की जलवायु वाले स्थानों पर उगाया जा सकता है। उत्तर भारत के मैदानी भागों में तुलसी को ग्रीष्म ऋतु की फसल के रूप में उगाया जा सकता है। तुलसी की संतोषजनक वृद्धि के लिए मध्यम तापक्रम अधिक उपयुक्त रहता है। अधिक वर्षा तथा पाला तुलसी की उपज पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

भूमि: तुलसी को विभिन्न प्रकार की मृदाओं एवं जलवायु में आसानी से उगाया जा सकता है। तुलसी की खेती करने के लिए दोमट एवं बलुई दोमट मिट्टी जिनका पी.एच. 5-8 हो एवं जलधारण क्षमता अच्छी हो, उपयुक्त समझी जाती है। अधिक रेतीली व भारी दोमट मिट्टी उपयुक्त नहीं है।

खेत की तैयारी: खेत को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो बार देशी हल या कल्टीवेटर से जोत कर पाटा लगाएं। गोबर की गली सड़ी खाद उपलब्ध हो तो अंतिम जुताई के समय मिट्टी में मिला दें। खेत की तैयारी इस प्रकार करें कि मई-जून में पौध लग जाए।

किस्म: कुसुमोहक एवं विकार सुधा ब्प्ड।च् लखनऊ द्वारा विकसित किस्में हैं।

नर्सरी: मैदानी भागों में बीज की नर्सरी अप्रैल-मई में एक मीटर चौड़ी व चार मीटर लंबी उठी हुई बनाएं तथा घास-फूस रहित हो। प्रत्येक क्यारी में 4 किलो गोबर की गली सड़ी खाद मिलाएं तथा प्रति क्यारी 20-30 ग्राम बीज बोएं। तुलसी का बीज बहुत ही हल्का होता है इसलिए उसमें रेत मिला लें। बुवाई करते समय लाईन से लाईन की दूरी 6 सैं.मी. रखें। एक एकड़ की रोपाई के लिए 8 क्यारियां तथा 200-250 ग्राम बीज पर्याप्त होता है। बीज का भाव लगभग 500 रु. प्रति किलो है। नर्सरी को पुआल से ढक दें व सिंचाई करें। तुलसी का बीज 3-10 दिन में जम जाता है। जैसे ही बीज उग आए पुआल को हटा दें। ज्यादा गर्मी के दिनों में हल्का पानी सुबह और शाम लगाएं। 20-25 दिन के बाद पौधा 10-15 सैं.मी. का हो जाए तो उसे उखाड़ कर खेत में रोप दें।

रोपाई: नर्सरी से पौध उखाड़ने के तुरंत बाद पौध को गीले कपड़े या टाट की बोरी से ढक दें जिससे अधिक गर्मी के कारण पौध न मुरझाए। पौधों की रोपाई सायंकाल में करें। लाईन से लाईन की दूरी 45 सैं.मी. तथा पौधों की दूरी 30 सैं.मी. रखें। प्रत्येक क्यारी की रोपाई करने के बाद सिंचाई करते जाएं।

खाद: तुलसी की खेती में अधिक पैदावार के लिए 15-16 टन गोबर की खाद प्रति एकड़ खेत तैयार करते समय डालें।

सिंचाई तथा जल प्रबंध: वर्षा शुरू होने से पहले 10-12 दिन के अंतर पर सिंचाईयां करें। सितंबर में भी सिंचाई की आवश्यकता पड़ सकती है। अधिक वर्षा होने पर ज्यादा देर तक खेत में पानी न रुकने दें।

निराई-गुड़ाई तथा खरपतवार नियंत्रण: पहली निराई गुड़ाई 20-25 दिन बाद तथा दूसरी 40-45 दिन बाद करनी चाहिए।

कटाई: तुलसी की फसल 10-12 सप्ताह में तैयार हो जाती है। पौधों की निचली पत्तियाँ पीली पड़ने पर फसल की कटाई करें। अंतिम कटाई के समय पूरे पौधे को ही काट कर तेल निकलवा सकते हैं। कटाई के बाद 4-5 घंटे फसल को हल्की धूप में सुखा लें। पहली कटाई 75-90 दिन तथा शेष कटाईयां 45-60 दिन के अंतराल पर करें। फसल की कटाई भूमि की सतह से 15-20 सैं.मी. ऊपर से करें जिससे अगली कटाई के लिए फसल जल्दी तैयार हो सके। शाक की पैदावार और तेल की मात्रा भूमि की उर्वरा शक्ति और जलवायु पर निर्भर करती है।

प्रमुख कीट: तुलसी में कई प्रकार के कीट पत्तियों व फूलों को खाकर नष्ट करते हैं जिनमें से प्रमुख कीट इस प्रकार हैं:

प) तुलसी का पर्ण बेलक (बासिल लीफरोलर): इस कीट का प्रकोप मैदानी भागों में जुलाई से सितंबर तक देखा गया है। सूंडी पत्तियों को लपेट कर अंदर ही अंदर नष्ट कर देती है। कभी-कभी कीट की सूंडी फूल के पास जाला सा बना कर अंदर फूल को चट कर जाती है। रोकथाम के लिए बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

पप) रोमयुक्त सूंडी (हेयरी कैटरपिलर): वयस्क मादा समूह में निचली पत्तियों पर अंडे देती है। 4-6 दिन में अंडों से बच्चे निकलने लगते हैं। प्रथम व द्वितीय अवस्था में सूंडियां समूह में रह कर पूरा पौधा चट कर जाती है। तीसरी व चौथी अवस्था में सूंडी एक पौधे से दूसरे पौधे पर, फिर धीरे-धीरे पूरे खेत में पहुंच जाती है। रोकथाम के लिए शुरू की अवस्था में जब कीट समूह में हो तो पौधे को उखाड़ कर जला दें तथा बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

प्रमुख रोग: प) झुलसा (ठसपहीज): यह रोग आल्टरनेरिया नामक फफूंदी द्वारा होता है। रोग से पौधे के ऊपरी भाग में चकते बन जाते हैं जो शुरू में बादामी तथा बाद में काले हो जाते हैं। कभी-कभी रोग तने पर भी चकते बनाता है। रोगग्रस्त पत्तियां गिर जाती हैं। यदि पौधों पर रोग का आक्रमण अधिक हो तो उन्हें उखाड़ कर जला दें तथा बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

पप) पत्तियों का झुलसा (स्मीं इसपहीज): यह रोग कोलेटोट्राइकम कैप्सकी नामक फफूंदी द्वारा होता है। सबसे पहले छोटे-छोटे धब्बे बनते हैं और बाद में मिल कर बादामी बड़े चिकते हो जाते हैं। रोग का प्रकोप पुरानी पत्तियों पर ही अधिक होता है। रोकथाम झुलसा रोग की तरह करें।

पपप) उकठा (ॅपसज): यह रोग फ्यूजेरियम आक्सीस्पोरम नामक फफूंदी द्वारा होता है। शुरू में रोग का आक्रमण होने पर पत्तियां मुरझाने लगती हैं। फिर शाखा मुरझाती है और धीरे-धीरे पूरा पौधा सूख जाता है। पानी जमा होने वाली भूमि में रोग का प्रकोप अधिक होता है। यदि पौधे को उखाड़ कर बीच में चीर कर देखा जाए तो तने के अंदर बादामी धारी दिखाई देती है। खेत में उचित जल निकास का प्रबंध करें। रोपाई करने से पहले 0.2 प्रतिशत टेफसान या एगलोल कीटनाशक घोल में पौधें की जड़ों को डुबो कर रोपाई करके कुछ रोकथाम की जा सकती है।

तेल की पैदावार: कटाई के बाद 4-5 घंटे तक फसल को छाया में सुखा लें जिससे पौधों की नमी कम हो सके। इस बात का ध्यान रखें कि पौधों को धूप न लगे, वरना तेल की मात्रा कम हो जाएगी। कटाई खुले मौसम में करने से उपज अच्छी मिलती है तथा भाप द्वारा आसवन विधि से तेल निकालें। ताजा वजन के अनुसार पौधों में 0.2-0.3 प्रतिषत तेल होता है। एक एकड़ से 40-60 किलो तेल प्रति वर्ष 2-3 कटाई में प्राप्त होता है। तेल की गुणवता लिनालूल, मिथाईल चेविकोल एवं मिथाईल सिनामेट पर निर्भर करती है।

आय-व्यय: तेल का औसत भाव 200-250 रुपए प्रति किलोग्राम है और खेती पर लगभग 3000 रु. प्रति एकड़ खर्च आता है। इस प्रकार लगभग 6000 रु. प्रति एकड़ की आय अप्रैल से नवम्बर तक होती है।

पप. लौंग तुलसी (ओसीमम ग्रेटीसीमम किस्म क्लोसीमम)

तुलसी की विभिन्न प्रजातियों में से ओसिमम ग्रेटीसीमम किस्म क्लोसिमम एक सुगन्धित तेल वाली बहुवर्षीय फसल है जिसके तेल में लौंग के तेल के सभी गुण होते हैं। इसके तेल में यूजीनोल नामक सुगंधित तत्व होता है।

उपयोग: इसका तेल खाद्य पदार्थों में खुशबू के अलावा दंत चिकित्सा और दंत मंजन में भी प्रयोग किया जाता है।

जलवायु: यह विभिन्न प्रकार की जलवायु में उगाया जा सकता है, जैसे उष्ण, उपउष्ण तथा गर्म आर्द्रता वाले क्षेत्र जहाँ 85-130 सैंटीमीटर वर्षा हो। इसके अलावा इसे शीत एवं उपशीत क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है।

भूमि: यद्यपि इसको विभिन्न प्रकार की भूमि पर लगाया जा सकता है परंतु रेतीली दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. मान 6.5 से 8.0 हो, अति अनुकूल है।

किस्म: आर. आर. एल. ओ. जी.-14

नर्सरी की तैयारी: नर्सरी की जगह को 3-4 बार अच्छी तरह तैयार करें तथा बाद में एक भाग मिट्टी व एक भाग गोबर की खाद को मिलाकर उठी हुई क्यारियां बनायें ताकि पानी क्यारियों में इकट्ठा न हो। 200 ग्राम बीज एक एकड़ के लिए काफी रहता है। बीज को क्यारियों में छिड़क कर उस पर रेत तथा गोबर की खाद की बारीक तह लगा दें तथा फव्वारे से सिंचाई दें। बीज 10-15 दिन में अंकुरित हो जाते हैं तथा पौधे 4-5 सप्ताह में रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं। नर्सरी बिजाई का उपयुक्त समय मार्च का महीना है।

खेत की तैयारी: खेत को 2-3 बार जोतकर अच्छी तरह बारीक तैयार तथा समतल करें ताकि ज्यादा पानी खड़ा न हो सकें।

खाद: खेत तैयार करते समय लगभग 10-12 टन गोबर की अच्छी गली सड़ी खाद प्रति एकड़ डालें।

पौध रोपाई: जब पौधों की लंबाई 10-15 सैं.मी. हो तथा 5-6 पत्तियां आ जाएं तो खेत में 60म60 सैं.मी. रोपाई कर दें। रोपाई के तुरंत बाद पानी अवश्य लगायें।

सिंचाई: आरम्भ में 2-3 हल्की सिंचाई करें ताकि पौध जड़ पकड़ सकें। बाद में आवश्यकतानुसार पानी लगायें। प्रत्येक कटाई बाद पानी अवश्य लगाएं तथा बाद में गुड़ाई करें।

कटाई: साल में तीन कटाई ली जा सकती है। फूल आने पर फसल को 15-20 सैंटीमीटर जमीन से ऊंचा काटें। कटाई क्रमश: जून, सितंबर और नवंबर मास में लें।

तेल की मात्रा: हरे चारे में तेल की मात्रा लगभग 0.4 से 0.5 प्रतिशत होती है। प्रथम वर्ष में लगभग 50-60 लीटर तेल प्रति एकड़ प्राप्त किया जा सकता है जबकि बाद में यह मात्रा बढ़कर 80-100 लीटर प्रति एकड़ हो जाती है।

आय-व्यय: तेल का औसतन भाव 250 रु प्रति लीटर है। इस प्रकार प्रथम वर्ष में लगभग 8,000-9,000 रु तथा बाद में 15,000-20,000 रु प्रति एकड़ तक लाभ मिल जाता है।